नया ज्ञानोदय

अप्रैल 2018
पृष्ठ 116
40 रुपये

स्मृतिशेष केदारनाथ सिंह
पर विशेष सामग्री

भारतीय ज्ञानपीठ

शब्द निवेश

रेखा सेठी

रेगिस्तान में ओस की एक बूँद

अफ़ग़ानिस्तान में कविता की परम्परा रेगिस्तान में ओस की एक बूँद की तरह है। तमाम हिंसा और आघात झेलती यह धरती यदि अपनी कला और संस्कृति को जीवित रख सकी है तो वह शब्दों के उस मरहम के कारण ही सम्भव हुआ जो कविता के माध्यम से एक सम्भावना बन कर उभरते हैं। इस धरती ने अनेक प्रकार की भौतिक एवं सांस्कृतिक तबाही को झेला है। 1979-89 तक लगभग दस वर्ष का समय सोवियत रूस के आक्रमण का साक्षी रहा। 1994-96 भीतरी संकट और आपसी लड़ाई का समय था और 2001 से लेकर अब तक अमेरिकी वर्चस्व ने अफ़ग़ानिस्तान में व्यवस्था और शासन को बहुत बड़ी चुनौती दी है। तालिबान की धार्मिक कट्टरता और पश्चिमी उदारवाद के मॉडल के बीच घिरा अफ़ग़ानिस्तान स्वयं को सांस्कृतिक टकराहट के दोराहे पर पाता है। उस समाज में बहुत से लोगों के लिए मुक्ति के मायने केवल पश्चिमी उदारवाद का आदर्श नहीं है, न ही वे तालिबानी विचारधारा के अनुसार परिवार और परम्परा का ऐसा रूप चुन पाते हैं जो समाज की आधी आबादी विशेषत: महिलाओं और बच्चों से उनके मौलिक अधिकार छीन कर उनकी ज़िन्दगी को और दुष्कर बनाता है।

सामाजिक-राजनीतिक दृष्टि से देखें तो धर्मोन्माद एवं आतंकवाद के कारण होने वाली हिंसा अफ़ग़ानिस्तान के जन-समाज की जीवन स्थितियों को संकटपूर्ण बनाती है लेकिन ग़रीबी और सामाजिक असमानता उससे भी बड़ी चुनौती है। ऐसे में युवा वर्ग स्वयं को और भी असुविधापूर्ण स्थिति में पाता है। वे हालात से असन्तुष्ट, कुंठित तथा निराश हैं जैसे अपने ही वतन में ज़िलावतन हो गए हों। यहाँ का सामाजिक ढाँचा लम्बे समय से आर्थिक और राजनीतिक दृढ़ता के बिना किसी तरह अपने को जीवित रखे हुए है। इस निराशा से निकलने की कोई सूरत बनती है तो वह उस देश की सम्पन्न सांस्कृतिक धरोहर के कारण ही सम्भव है। साहित्य, संगीत व कलाएँ वह अवसर देती हैं जिससे भीतर की पीड़ा जिसे वे 'दर्द-ए-दरूनी' कहते हैं, कुछ कम हो सके। वहाँ की कविता उस पीड़ा और संघर्ष का उद्घोष है। स्त्री हो या पुरुष सभी के साहित्य में मुक्ति की आकांक्षा और कभी न हारने वाली जिजीविषा केन्द्र में है। अपनी कविताओं के माध्यम से वे एक ऐसे समाज की परिकल्पना प्रस्तुत करते हैं जिसमें सामाजिक स्थायित्व हो और पीड़ा के आघात को कम कर उस समाज का पुनर्गठन किया जा सके।

अफ़ग़ानिस्तान में अनेक भाषाएँ और बोलियाँ हैं। समाज का बड़ा हिस्सा जिन क़बीलों

में रहता है उसके अपने रीति-रिवाज़ और भाषा हैं। पश्तो, दरी, उज़बेकी, तुर्कमानी, करगेज़ी, नूरेस्तानी, पशई, परहावी, बलोची, पमीरी, कजरी और गोवारी यहाँ की प्रमुख भाषाएँ हैं। कविता और साहित्य की दृष्टि से पश्तो और दरी में अधिकांश साहित्य रचा जा रहा है। दरी, फ़ारसी का ही एक रूप है। राजनीतिक उथल-पुथल के कारण विस्थापन अफ़ग़ानी समाज का एक मूल मुद्दा है। मीडिया में अनेक ऐसे चित्र हैं जहाँ अफ़ग़ान रिफ्यूजी स्थायित्व और सुरक्षा के लिए अपने देश की सीमाओं को पार कर दूसरे देशों में भटक रहे हैं। शिक्षित जन समाज का बड़ा तबका यूरोप और अमरीकी देशों की ओर प्रस्थान कर गया है तो दूसरा वर्ग सउदी अरब, पाकिस्तान और ईरान में फैल गया। इन देशों में जाकर भी यहाँ के बाशिन्दों ने अपनी कविता और साहित्य को जीवित रखा। ईरान में तो इतने अफ़ग़ान रिफ्यूजी हैं कि फ़ारसी कविता की एक धारा विस्थापन की अनसुनी कहानियों का बयान बन जाती है। यूँ भी ईरान में फ़ारसी और अफ़ग़ानिस्तान में दरी एक ही भाषा के दो रूप हैं। दरी में कविता करने वाले कुछ महत्त्वपूर्ण नाम हैं— रूदकी, राबिया बल्ख़ी, अनवरी, मौलाना जलालुद्दीने मुहमद बल्ख़ी, सनई ग़ज़नवी, फिरदौसी, हाफ़ीज़ और पश्तो में खोशहाल ख़टक, अब्दुल रहमान बाबा, हमीद मोमांद, काज़ेम ख़ाँ शइदा, नाज़ो अना, हलीमा खटक, ज़रग़ोना काकर आदि।

फ़ारसी कविता की विरासत प्रेम और भक्ति की विरासत है जिसमें सामाजिक ताने-बाने का आधार आध्यात्मिक रूहानियत है। आज की कविता एक ख़ास अर्थ में राजनीतिक कविता कही जाएगी क्योंकि लगभग सभी कविताओं का अन्तरपाठ राजनीतिक-सामाजिक सरोकारों को व्यक्त करता है। प्रेम, वियोग और भक्ति अब भी कविता में स्थान पाते हैं पर पहले जैसे प्रेम का महा-आख्यान रचने वाली कविताएँ अब विरल हैं। प्राचीन कविताओं में अफ़ग़ान संस्कृति या मातृभूमि के प्रति प्रेम के ओजस्वी चित्र साहित्य का केन्द्र थे, वे बिम्ब अब बिखरने लगे हैं। शिक्षित अफ़ग़ानी जन-समाज के पश्चिमी सम्पर्क ने उनके लिए 'स्व और देश' की धारणा को बहुत हद तक बदल दिया है। इन कवियों ने अपने पारम्परिक कवियों जैसे रुमी, सनाई तथा ज़ामी की कविता के अन्दाज़ को विश्व भर में पहुँचाया फ़ारसी कविता के अनुवादों की अनेक वेबसाइट विश्व से इस कविता का परिचय करा रही है। देश और कविता दोनों दृष्टियों से अफ़ग़ानिस्तान को लेकर विश्व में बहुत-सी धारणाएँ पलती रही हैं। यहाँ के कवि-साहित्यकार उन धारणाओं को अस्वीकार करते हुए अपने देश और मिट्टी की सही तस्वीर पेश करना चाहते हैं। समकालीन कविता के कुछ प्रमुख नाम हैं—बहार सईद, परवीन पाजवाक़, कनबर अली तोबेश, परताव नादरी, अज़ीता ग़हरेमन, परवीन फैज़ ज़ादाह मलाल, अब्दुल बारी जाहानी, नदिया अंजुमन, ज़ाहरा हुसैन ज़ादाह।

कठिन समय में परिवर्तनकामी कविता, उठ खड़े होने की ताक़त का आश्चर्यजनक सच है। ये कवि अन्तर्विरोधों का अहसास कराते हुए भी युद्धग्रस्त मातृभूमि के विकास का नया मॉडल प्रस्तुत करते हैं। उनका स्वर युद्ध विरोधी एवं मानवीय करुणा से परिपूर्ण है, जिससे बराबरी का समाज बन सके। इस कविता में स्त्री की आवाज़ मुख्य है। स्त्री अपने लिए नयी दिशा चुन रही है जिस पर से उसे लौटाया नहीं जा सकता। तालीबान की स्वीकृत जीवन शैली में कविता का दर्जा बहुत ऊँचा नहीं है। स्त्रियों के लिए तो यह लगभग गुनाह है फिर भी वहाँ की स्त्रियों ने अभिव्यक्ति के ख़तरे उठाने का साहस किया है। आज के समय में स्त्रियों में अपनी बात कहने की बेहद बेचैनी है। अफ़ग़ानिस्तान की वो महिलाएँ जो अपने देश की बंदिशों से बाहर निकल गईं उन्होंने तरह-तरह की बंदिशों के बीच में रहती स्त्री की सही तस्वीर पेश करने की कोशिश की है।

अफ़ग़ानिस्तान में राबिया बाल्खी स्त्री शक्ति का प्रतीक है। कहानी कुछ ऐसी है कि कई शताब्दियों पहले शहज़ादी राबिया के भाई ने एक ग़ुलाम से प्रेम करने के जुर्म में उसे मौत के घाट उतरवा दिया था। आज उसके देश की ख़ुद्दार महिलाएँ ख़ुद को राबिया की बेटियाँ कहती हैं। इस नाम से एक ब्लॉग पर आपको अफ़ग़ानिस्तान की बहुत-सी महिलाओं की कविताएँ मिल जाएँगी। राबिया की प्रेरणा से ये महिलाएँ लैंगिक समानता, सामाजिक न्याय एवं मानवाधिकार की लड़ाई लड़ रही हैं। वहाँ की स्त्री-कविता पर बात करते हुए हेरात की युवा कवयित्री नादिया अनजुमन की चर्चा विशेष रूप से होती है जिसने पच्चीस वर्ष की उम्र में अपना पहला काव्य-संकलन प्रकाशित किया। 2005 में नादिया की हत्या कर दी गई। सम्भवत: उसके पति द्वारा किन्तु नादिया के माध्यम से स्त्री-चेतना का जो अलख जगा उसने अनेक स्त्रियों को स्त्री चेतना के स्तर पर जोड़ दिया। वह अफ़ग़ानिस्तान की स्त्री का चेहरा बनकर उभरी। अफ़ग़ान स्त्री की कविता केवल पीड़ा या निराशा की ही नहीं, उसके अपने डर हैं तो आशाएँ-आकांक्षाएँ भी हैं। उसकी कविता उसको सशक्त बनाती है जिससे वह अपने मानसिक क्षितिज का विस्तार कर सके और अपने मानवीय सरोकारों से देश व दुनिया को नयी दृष्टि से पहचान सके। स्त्री संघर्ष उनका मुद्दा है ही लेकिन उससे बड़े-बड़े मुददे् भी उनकी कविता में शामिल हैं। बड़े मुद्दे से तात्पर्य उस मानवीय संवेदना से है जो स्त्री-पुरुष के भाव क्षेत्र में समान रूप से शामिल हैं। उनका कहना ये है कि बहुत से मायनों में स्त्री की ताक़त पुरुष से कहीं अधिक है, क्योंकि जिस तरह वह अपने आस-पास के संसार को देखती हैं जीवन और प्रकृति से सम्बन्ध बनाती हैं वह पुरुष की अपेक्षा कहीं अधिक स्वाभाविक है, संवेदनशीलता में जैसे स्त्री और प्रकृति एक हो गए हों। बहुत सी महिलाओं ने देह मुक्ति की बात न करते हुए भी अपनी दैहिक इच्छाओं को व्यक्त किया है।

अफ़ग़ानिस्तान, ईरान तथा मध्य एशिया के अन्य देश उस फ़ारसी साहित्य के उत्तराधिकारी हैं जिसमें अन्दाज़ेबयाँ पर बहुत

बल रहा। छन्द और लय का पारम्परिक ताल-मेल इस कविता को मुख्यत: कविता की वाचिक परम्परा में स्थापित करता रहा है। ग़ज़ल, शेरो-शायरी की यह दुनिया अब अपने आपको उस मक़ाम पर पाती है जहाँ अभिव्यक्ति द्वारा अपने मन की गाँठों को खोलने का प्रयास सभी लेखक और कवि कर रहे हैं।

अफ़ग़ानिस्तान की कविता में एक विशेष काव्यरूप भी प्रयोग होता है जिसे 'लंडई' कहा जाता है। दो-दो पंक्तियों में कहे जाने वाले 'लंडई' कविता-रूप में सब कुछ कह देने की बेचैनी है। 'लंडई' में होने वाली अभिव्यक्ति बहुत महत्त्वपूर्ण है। उसके पाठ व अन्त:पाठ की कई व्याख्याएँ सम्भव हैं, क्योंकि वह मन की तहों में छिपे भावों का उच्चार है। भावना और आक्रोश के विवादी स्वर कविता में संवाद करते हैं। केवल नौ शब्दों और बाईस अक्षरों में कही जाने वाली इस कविता की तुलना ज़हरीले साँप से की जाती है। काबुल में ऐसी विशेष सभाएँ होती हैं जहाँ इस क़िस्म के शेर सुने-सुनाये जाते हैं। ये कविताएँ प्यार की हैं, युद्ध की हैं, हमलावर ड्रोन की हैं, अमेरिकी सैनिकों की हैं, दैहिक कामनाओं की भी हैं यानी कोई बन्दिश नहीं। सरल-सी दिखने वाली ये कविताएँ कहने वालों के लिए जान-जोखिम से कम नहीं हैं।

अफ़ग़ानिस्तान के बहुत से कवियों-साहित्यकारों ने यह महसूस किया है कि कविता उनकी तप्त आत्माओं के लिए सुकून की पनाहगार है। ये बहुत हैरानी की बात है कि तालीबान शासन में भी अफ़ग़ानिस्तान का कविता से रिश्ता नहीं टूटा जो वहाँ की संस्कृति को जानता है वही समझ सकता है कि कविता कैसे यहाँ के लोगों के जान प्राण में बसती है। कविता के माध्यम से ही वे एक सपनों की दुनिया बुन पाते हैं। यातना और संघर्ष के बीच आप महसूस कर पाते हैं कि अभी भी प्रेम करने की कूवत बची है यानी दुनिया अब भी सुन्दर हो सकती है। शब्दों-पंक्तियों के बीच से उभरती जिजीविषा विपरीत परिस्थितियों में घिरे मनुष्य के लिए जीवित होने का अहसास है।

प्रस्तुत हैं कुछ कविताओं के अनुवाद, जिन्हें अपनी एक छात्रा की मदद से किया गया है। अफ़ग़ानिस्तान से भारत में राजनीति पढ़ने आई मुरस्सा की माँ स्वयं कवयित्री हैं, मैं उन दोनों के प्रति आभार प्रकट करती हूँ। इन कविताओं में भाषा और शैली का हू-ब-हू रूपान्तरण भले ही न हो पाया हो किन्तु भाव को पूरी सच्चाई के साथ संजोया गया है।

बारिश के नाम ख़त

प्यारी बारिश
बीत चुकी हैं सर्दियाँ
खत्म होने को है बसन्त भी
बग़ीचे की हर शह को तुम्हारी कमी खल रही है
बताओ कब आओगी?

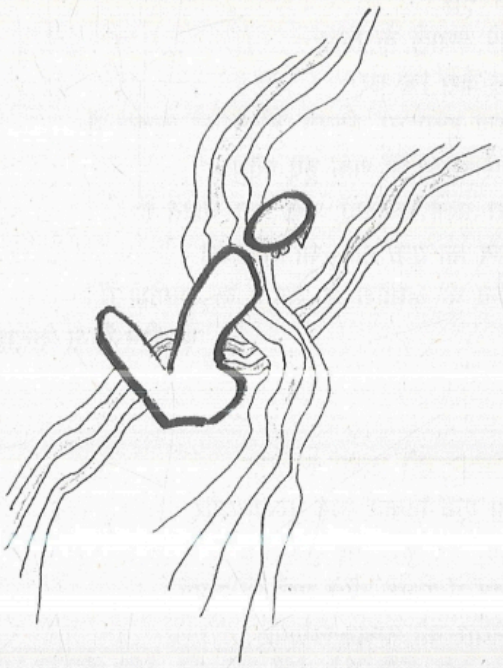

ओह बारिश! बरखा! बहार!
दयालु और नरम दिल
कुछ नहीं पहुँचता बग़ीचे तक
उड़ती मिट्टी के सिवा
मिट्टी, लाल मिट्टी
गुज़रते राहगीरों के पैरों की मिट्टी
रेगिस्तानों, पहाड़ों और जंगलों से
उड़ती धूल
जम गई है दीवारों, किनारों पर

ओ बारिश! नरम फुहार!
बग़ीचे का आख़िरी परिन्दा भी
उड़ जाएगा सूरज डूबने के साथ
उसके खुले डैने पर लिख दी है मैंने यह कविता
पहुँचेगी तुम तक या नहीं?
रोता रहा डेहलिया सारा दिन तुम्हारे लिए
उनको बहलाने को मैंने लिख दी है यह कविता
चली आना बारिश! इस कविता के मिलते ही
झट चली आना।

रज़ा मोहम्मदी

रेगिस्तान के फूल की तरह

रेगिस्तान के फूल की तरह बरसात की राह तकते
जैसे नदी का किनारा प्यासा हो घड़ों की छुअन के लिए

जैसे भोर
तड़पे उजाले के लिए
और जैसे कि घर
उजड़ा हुआ घर, किसी औरत की तलाश में
हमारे समय के थके हुए लोग
साँस भरने के लिए, एक पल चाहते हैं
समय का एक पल, सो जाने को
शान्ति के आग़ोश में, शान्ति के आग़ोश में।

परवीन फ़ैज़ ज़दाह मलाल

शनिवार को नम्बर लगाना

लेना एक टिकट, वह नुस्ख़ा और
मुट्ठी भर कुछ फटे हुए नोट
लाइन में सबसे पीछे खड़े हो जाना
शनिवार को नम्बर लगाना
तैय्यबा फिर से बीमार है
फ़ोन करना होगा उसे
दफ़्तर से छुट्टी के लिए झिक-झिक भी
जाने दो कि वो क्या देखती है, सब्र रखो
उसकी ही कोहनी से सरका देना
कोई चाँद या सितारा
खरीद देना कुछ कपड़े-जूते, चूड़ियाँ-बालियाँ
रंगों को देखकर ख़ुश हो जाएगी
मेरी बहन ठीक तो हो जाएगी?
कुछ पूजा-अर्चना करना
लेना एक टिकट, वह नुस्ख़ा और
मुट्ठी भर फटे हुए नोट
लाइन में सबसे आगे खड़े हो जाना
शनिवार को नम्बर लगाना।

ज़ाहरा हुसैनज़ादाह

पत्ते-सी क़िस्मत

परिंदा नहीं है इंसान
कि जिस भी छोर उड़े वहीं बना ले अपना घर
इंसान की क़िस्मत पत्ते-सी है
पत्ता, जो बिछड़ कर अपनी टहनी की ऊँचाइयों से
मसला जाता है गली से गुज़रते लोगों के पैरों तले।

क़नबर अली तोबेश

उदासी

तुम्हारी हथेलियों की लकीरों में
उन्होंने लिख दी है क़िस्मत सूरज की
उठो
ऊपर उठा दो अपना हाथ
लम्बी रात में दम घुट रहा है मेरा।

क़नबर अली तोबेश

'लंडई' के कुछ उदाहरण*

1
मैं पुकारती हूँ तुम्हें
तुम बुत बन जाते हो
एक दिन ढूँढोगे तुम
और पाओगे मैं जा चुकी हूँ—

2
ए ख़ुदा! ख़ाक कर तालिबान को
अन्त कर दे उनके युद्धों का
अफ़गान औरतों को जिन्होंने
बना दिया बेवा और वेश्या!

3
बेच डाला तुमने मुझे ओ पिता
उम्रदराज़ उस आदमी के हाथ
ग़र्क करे तुम्हारा घर ए ख़ुदा
आख़िर तो मैं बेटी थी तुम्हारी!

4
टूट जाए तुम्हारा वो हवाई जहाज़
मर जाए उसका पायलट
बम गिराने जो निकला है
मेरे प्यारे अफ़ग़ानिस्तान पर

5
बहनें जब साथ बैठती हैं
हमेशा भाइयों की तारीफ़ करती हैं
भाई जब साथ बैठते हैं
अपनी बहनों को बेच देते हैं
औरों के हाथ

*ये उस शैली का प्रतीक नहीं, सरल भावानुवाद हैं। विषय की विविधता दर्शाने के लिए इन्हें प्रस्तुत किया जा रहा है।

मो.: 9810985759